कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, मार्च 2026 | वर्ष 4, अंक 29, पृष्ठ 4





रामलाल आनंद महाविद्यालय की एनसीसी के वार्षिक उत्सव 'विक्रांत' में छात्राओं ने परेड में हिस्सा लिया (बाएं) और समारोह के मुख्य अतिथि कर्नल मनीष वर्मा के साथ प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता व अन्य अतिथि।

कैडेट्स की कदमताल से गूंजा देशभक्ति का स्वर

खुशी प्रजापति/आलोक यादव

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में उत्साह और देशभक्ति के वातावरण में एनसीसी का वार्षिक उत्सव 'विक्रांत' का आयोजन हुआ। महाविद्यालय में 16 फरवरी 2026 को हुए आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में 7 डीबीएन के कर्नल मनीष वर्मा ने कहा कि एनसीसी केवल एक संगठन नहीं, बल्कि युवाओं के चरित्र निर्माण, नेतृत्व क्षमता और अनुशासन को सशक्त बनाने का प्रभावी मंच है।

उन्होंने कहा कि एनसीसी से जुड़कर युवा न केवल शारीरिक रूप से सक्षम बनते हैं बल्कि मानसिक रूप से भी मजबूत होते हैं। उन्होंने 'ग्रीन कैंपस, क्लीन कैंपस' अभियान तथा समाज के समग्र विकास में एनसीसी की सकारात्मक और सक्रिय भूमिका को रेखांकित करते हुए कैडेट्स को पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक जिम्मेदारी और राष्ट्र सेवा के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने कैडेट्स को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उनके समर्पण और परिश्रम से दिल्ली विश्वविद्यालय के तीन दिवसीय लिटरेचर फेस्ट का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। उन्होंने कहा कि किसी व्यक्ति का धैर्य, धर्म, ज्ञान और आचरण उसकी वाणी और व्यवहार से ही परिलक्षित होता है और एनसीसी इन गुणों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्राचार्य ने कर्नल मनीष वर्मा सहित आयोजन में आए सभी आगंतुकों का स्वागत किया। समारोह में शामिल होने और प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय

- **महाविद्यालय में एनसीसी का वार्षिक उत्सव 'विक्रांत' का आयोजन हुआ**
- **समाज के समग्र विकास में एनसीसी की सकारात्मक और सक्रिय भूमिका**

के विभिन्न महाविद्यालयों से आए कैडेट्स का स्वागत करते हुए शुभकामनाएं दीं।

समारोह में बेस्ट कैडेट, स्क्वाड ड्रिल, क्वार्टर गार्ड, लेक्चरेट, क्विज, टग ऑफ वॉर, सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं, रील मेकिंग और वीडियोग्राफी जैसी अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। ग्राउंड पर कैडेट्स की कदमताल और परेड ने पूरे वातावरण को ऊर्जा से भर दिया।

सांस्कृतिक सत्र के दौरान सूबेदार मेजर प्रेम सिंह, हवलदार सुकरन पुनिया, हवलदार परमजीत सिंह, हवलदार मेहर चंद सहित 4 डीबीएन और 7 डीबीएन के कई अधिकारियों और प्रशिक्षकों को सम्मानित किया गया। कर्नल मनीष वर्मा, एएनओ कैप्टन डॉ. संदीप, लेफ्टिनेंट डॉ. कामेश्वर और कैप्टन डॉ. भूपेंद्र को भी सम्मानित किया गया।

धन्यवाद ज्ञापन दिल्ली विश्वविद्यालय के एनसीसी संयोजक और महाविद्यालय के एनसीसी अधिकारी मेजर प्रो. संजय कुमार ने किया। उन्होंने राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका को रेखांकित किया। मंच संचालन एनसीसी कैडेट तानिया गौंड और कैडेट मंत्रम ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय की उपप्राचार्य प्रो. प्रेरणा दीवान, प्रो. प्रदीप शर्मा, डॉ. रीटा जैन, डॉ. कृष्ण गोपाल त्यागी सहित कई शिक्षक एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी और कैडेट उपस्थित रहे।

प्रतियोगिताओं के परिणाम

एसडी क्वार्टर गार्ड विजेता
- वीआईपीएस कॉलेज
- रनरअप–एमएआईटी

एसडब्लू क्वार्टर गार्ड विजेता
- एआरएसडी कॉलेज
- रनरअप–एसपीएमसी

एसडी स्क्वाड ड्रिल विजेता
- जीबीएसएस डीईओएलटी
- रनरअप–जीबीपीएएनटी

एसडब्लू स्क्वाड ड्रिल विजेता
- दयाल सिंह कॉलेज
- रनरअप–मैत्री कॉलेज

बेस्ट कैडेट एसडी विजेता
- नितिन जीआईईएसएस
- रनरअप–सचिन एआरएसडी

बेस्ट कैडेट एसडब्लू विजेता
- हर्षिता दयाल सिंह कॉलेज
- रनरअप–राधा, एआरएसडी

टग ऑफ वॉर एसडी विजेता
- श्यामलाल कॉलेज
- रनरअप–डीएएस

टग ऑफ वॉर एसडब्लू विजेता
- एसजीएनडी खालसा कॉलेज
- रनरअप–कालिंदी कॉलेज

लेक्चरेट विजेता
- अमन तिवारी, वीआईपीएस
- रनरअप–अजय कुमार

क्विज विजेता
- शिवांगी कॉलेज
- रनरअप–जीटीबीआईटी

पोस्टर मेकिंग विजेता
- श्यामा प्रसाद मुखर्जी कॉलेज
- रनरअप–जामिया विवि

सांस्कृतिक प्रतियोगिता विजेता
- सत्यवती कॉलेज
- रनरअप–मैत्री कॉलेज

पॉट पेंटिंग में दिखी रचनात्मकता

भारती

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की ग्रीन कैंपस हीरव समिति ने 11 नवम्बर 2025 को पॉट पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता के दौरान कला और आत्मविश्वास का मेल देखने को मिला। प्रतिभागियों ने साधारण मिट्टी के गमलों को रंगों से जीवंत बना दिया। किसी ने प्रकृति तो किसी पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता और हरित भविष्य जैसे संदेशों को अपनी पेंटिंग के माध्यम से प्रस्तुत किया।

प्रतिभागियों को पेंटिंग के लिए डेढ़ घंटे का समय दिया गया। इसमें प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र और नगद राशि से सम्मानित किया गया। प्रथम स्थान भूविज्ञान विभाग की मिनी, द्वितीय स्थान गणित विभाग की तन्वी और तृतीय स्थान सूक्ष्मजीव विज्ञान की अमृता ने हासिल किया। इस मौके पर हीरव समिति के संयोजक डॉ. दीपक सेतिया उपस्थित रहे।



अभिव्यक्ति और नॉर्थ ईस्ट स्टूडेंट वेलफेयर समिति के सहयोग से द व्हिस्पर ऑफ वैली फ्लैश फिक्शन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

फ्लैश फिक्शन और नॉर्थ ईस्ट संस्कृति की झलक

नंदनी वार्ष्णेय

नई दिल्ली। यह आयोजन न सिर्फ अभिव्यक्ति की रचनात्मकता को दर्शाता है बल्कि नॉर्थ ईस्ट समिति की संस्कृति की झलक को सामने लाने का प्रयास भी है। यह बात कार्यक्रम की मुख्य वक्ता और निर्णायक डॉ. दीप्ति भारद्वाज ने रामलाल आनंद महाविद्यालय में 25 सितम्बर 2025 को अंग्रेजी रचनात्मक लेखन समिति अभिव्यक्ति और नॉर्थ ईस्ट स्टूडेंट वेलफेयर समिति के सहयोग से आयोजित द व्हिस्पर ऑफ वैली फ्लैश फिक्शन प्रतियोगिता में कही। साथ ही उन्होंने कहा यह विधा विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति, भाषा कौशल और विचारों की स्पष्टता को परखती है। उन्होंने नॉर्थ ईस्ट की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं का उल्लेख करते हुए कहा कि साहित्य और संस्कृति का मेल युवाओं को एक–दूसरे के करीब लाता है।

निर्णायक के रूप में अंग्रेजी विभाग की शिक्षिका डॉ. दीप्ति भारद्वाज और डॉ. ताहा यासीन मौजूद रहे। फ्लैश फिक्शन प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को दिए जाने वाले विषय पर कम समय में ज्यादा लिखना होता है।

इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों को 500 शब्द लिखने के लिए 45 मिनट का समय दिया गया। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने नृत्य और गायन प्रस्तुतियां दीं। नेपाली दृश्य से नागा संगीत तक सब एक ही मंच पर प्रस्तुत किया गया। अभियक्ति के उत्कर्ष ने धन्यवाद ज्ञापन किया। नॉर्थ ईस्ट स्टूडेंट वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष उत्तम भी सदस्यों संग मौजूद रहे। तपलब्धा और विशाखा ने संचालन किया। कार्यक्रम में समिति के सदस्य सहित विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने अपनी उपस्तिथि दर्ज कराई।

पोस्टर के जरिए नशा मुक्ति का संदेश दिया

भूमिका शार्दूल

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की एनएसएस, एनसीसी और गांधी स्टडी सर्किल ने पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन 12 नवंबर 2025 को किया। प्रतियोगिता का विषय 'दी स्मोक दैट स्टोल हिज स्काई' रहा। इस मौके पर गांधी स्टडी सर्किल के संयोजक राजेन्द्र सिंह ने विद्यार्थियों को नशे से दूर रहने की सलाह दी। साथ ही रचनात्मकता से किस प्रकार समाज में जागरुकता पैदा हो सकती है, इसके बारे में विद्यार्थियों को जागरुक किया।

प्रतियोगिता में भाग ले रहे आकर्ष मौर्य, तन्वी वैभव और रेतूल मिश्रा ने क्रमशः पहला, दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त किया। इस मौके पर दिल्ली विश्वविद्यालय के एनसीसी प्रभारी मेजर प्रो. संजय कुमार, महाविद्यालय के एनएसएस संयोजक डॉ. अनुराग शर्मा, सीटीओ साक्षी सहित विभिन्न विभागों के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

आत्मकथाएं देती हैं प्रेरणा

किताबें हमारे जीवन की सबसे अच्छी साथी होती हैं। किताबें हमारे आसपास की दुनिया को समझने, सही और गलत के बीच निर्णय लेने में मदद करती हैं। एक बात समझने की है कि विद्यार्थियों के जीवन में संघर्ष की दास्तान होती है। इस संघर्ष की सच्ची साथी होती हैं किताबें। किताबें सिर्फ प्रतियोगी जीवन की साथी नहीं हैं बल्कि जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर हमारा मार्गदर्शन करने में सक्षम हैं। विद्यार्थियों को निर्देशित करने का सबसे अच्छा तरीका है किताबों से दोस्ती करने की सलाह देना।

महान व्यक्तियों की आत्मकथाओं को पढ़ने से उन लोगों के जीवन के बारे में पता चलता है। उससे प्रेरित होने में मदद करती है। हम जीवन में उनसे प्रभावित होते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' से



शिवानी

हम जीवन में सत्य, अहिंसा और अनुशासन सीख सकते हैं। अब्राहम लिंकन ने कहा है कि 'किताबें आदमी को यह बताने के काम आती हैं कि उसके मूल विचार आखिरकार इतने नये भी नहीं हैं।' इंटरनेट और मोबाइल फोन का उपयोग आम हो गया है। विद्यार्थी इन तकनीकों को अध्ययन के लिए अच्छा विकल्प मानते हैं, लेकिन ये तकनीकें किताबों के महत्व को कभी खत्म नहीं कर सकतीं। वर्तमान समय की बात की जाए तो लोगों ने किताबों को खरीदने से ज्यादा ई–पुस्तकों को अधिक महत्व दिया है। इंटरनेट का उपयोग करके और ई–पुस्तकें डाउनलोड कर लोगों को सूचना प्राप्त करना आसान लगता है। मेरे हिसाब से ई–बुक्स को पढ़ना उतना आसान नहीं है जितना किताबों को पढ़ना। एक किताब को हम किसी भी समय पढ़ सकते हैं। इसमें कुछ भी खर्च नहीं होता। सबसे महत्वपूर्ण है कि महसूस होना। किताबों को छूने का सुख। किताबों की महक। यह सब ई–बुक्स से कभी नहीं मिल सकता। इसलिए अपने जीवन का छोटा सा हिस्सा किताबों को दें। उन्हें खरीदें। अपनाएं और कुछ नया सीखें। इसी आशा के साथ मार्च 2026 का 'कैम्पस कनेक्ट' आपके सामने पेश है...।

सोचने को बाध्य करता सुभाष राय का लेखन

स्पन्दन आलोचना सम्मान से नवाजे गए

उत्कर्ष कुमार

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश के मऊ नाथ भंजन जनपद के बड़ागांव में एक जनवरी 1957 को जन्मे सुभाष राय पेशे से पत्रकार हैं। वह लम्बे समय से लखनऊ से प्रकाशित 'जनसंदेश टाइम्स' समाचार पत्र के संपादक हैं। उनकी प्रिय विधा कविता है, लेकिन वह अपने अनोखे गद्य के लिए भी जाने जाते हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में दबे–कुचले लोगों, आदिवासियों, स्त्रियों और अल्पसंख्यकों की आवाज को बल देने का काम किया है। उनकी कविताओं में प्रकृति, जंगल, नदी, आस्था, सामुदायिक संबंध और जीवन संघर्ष के अनेक बिम्ब दिखाई देते हैं।

सुभाष राय जब 10वीं में पढ़ रहे थे तभी से आपकी कविताएं और आलेख काशी से प्रकाशित जनवार्ता और गांडीव जैसे प्रसिद्ध समाचार पत्रों में प्रकाशित होने लगी थीं। इनका प्रमुख कार्य उत्तर भारत के विख्यात संत कवि दादू दयाल के रचना संसार पर है। सुभाष राय की अब तक सात किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। इसमें प्रमुख रूप से दो आलोचना की किताबें हैं। इसके साथ ही एक अग्रलेखों का संग्रह है। वहीं तीन कविता संग्रह हैं। इसमें सबसे अधिक चर्चा अक्क महादेवी पर केन्द्रित पुस्तक 'दिगम्बर विद्रोहिणी : अक्क महादेवी' नामक किताब है। इस किताब पर काफी विचार–विमर्श हुआ। मऊ से प्रकाशित 'अभिनव कदम' नामक पत्रिका ने बाकायदा इस किताब पर एक अंक तक निक. ाला। अनेक पत्रिकाओं में इस किताब पर समीक्षाएं लिखी गईं तो कई आयोजन पिछले वर्षों में हुए हैं।

वैसे स्पंदन समारोह से पहले भी सुभाष राय को कई सम्मान मिल चुके हैं। इनमे देवेन्द्र कुमार स्मृति कविता सम्मान, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ब्लॉगर सम्मान, हिन्द–युग्म सम्मान, माटी रतन सम्मान और नयी धारा रचना सम्मान शामिल हैं। लेखन के साथ सुभाष राय पत्रकारिता में सक्रिय हैं। अपने तीन दशक के सफर में पत्रकार के रूप में अमृत प्रभात, आज, अमर उजाला जैसे प्रतिष्ठित समाचार पत्रों में शीर्ष जिम्मेदारियां संभाली।

सम्मान ग्रहण करते हुए उन्होंने कहा कि ''उर्मिला शिरीष जी, सबकी आत्मा में जगे हुए शिरीष जी ने यह सब देखा होगा तो उन्हें आप पर गर्व हुआ होगा। यह उनकी छाया थी जो भोपाल आप के साथ खड़ा था। मुझे बहुत अच्छे लगे दो दिन आप के संग साथ के, आप के धीरज और नेह के। आभार नहीं कहूंगा क्योंकि वह इस नजदीकी, प्यार और स्नेह के बीच आ खड़ा होगा और फासला बढ़ा देगा। यह कार्यक्रम लोगों को लम्बे समय तक याद रहेगा।''



स्पंदन सम्मान समारोह में लेखक और कवि सुभाष राय ने रखे विचार।

समय का प्रबंधन कर कामयाब बनिए

एनजीओ में काम के लिए शुरुआती दौर में पैसा लगाना होगा : कृष्ण कुमार

सर, आपने अपनी औपचारिक शिक्षा के रूप में एमएसडब्ल्यूसी यानी मास्टर ऑफ सोशल वर्क किया है, हमें यह जानना था कि समाज सेवा में आपकी औपचारिक शिक्षा ने क्या भूमिका निभाई है और एमएसडब्ल्यूसी ने किस तरीके से आपके कार्य क्षेत्र को मजबूती प्रदान की है?

जब मैं 74 की उम्र मे था, मैं एनएसएस के प्रोग्राम के लिए गेस्ट स्पीकर लाता था तो मुझे एक दिन ऐसा महसूस हुआ कि यूनिवर्सिटी के बच्चे मेरे से क्वेश्चन करते थे, वह मुझे कई दफा समझ में ही नहीं आते थे। मैंने अपनी उस प्रतिभा को जगाने की कोशिश की। क्यों मुझे उन प्रश्नों का उत्तर आना चाहिए? फिर मैंने सोशल वर्क में मास्टर की पढ़ाई करने की कोशिश की। अब प्रश्न था कि मुझे एडमिशन कौन देगा? इस आयु के अंदर मुझे पता लगा कि इग्नू के अंदर आप इस कोर्स को कर सकते हैं। मैंने फिर 2016 में इग्नू में अप्लाई किया। जनवरी 2018 में आया। 80 नंबर के साथ मास एंड सोशल वर्क क्लियर किया। अब यह एक ऐसी चीज थी कि आप प्रोफेशनलिज्म की तरफ आ जाते हैं। कार्यक्रम को करने के बारे में आपको जानकारी होती है। आपके अंदर एक ऊर्जा रहती है। समझिये कि आपका आत्मविश्वास इतना बढ़ जाता है। मानो आपको लगता है अब मैं किसी भी तरह के लोगों के साथ बैठ कर समाज सेवा के ऊपर बात कर सकता हूं।

आप क्रिकेट क्लब के अध्यक्ष रहे हैं। इसके अलावा दिल्ली जिला क्रिकेट संघ के भी सदस्य रहे हैं। क्रिकेट और समाज सेवा दोनों ही क्षेत्रों में आपकी सक्रियता रही है। ऐस में आपको क्या लगता है कि खेल समाज सेवा को किस तरीके से जोड़ता है?

समाज सेवा को किस तरीके से जोड़ने का महत्त्व है–यह बच्चों के अंदर और ज्यादा निखारपन लाता है। यह एक कॉमन फैक्टर है। चाहे वह एनएसएस हो, स्पोर्ट्स हो, जो हम क्रिकेट की बात करते हैं, उसके अंदर भी एक ग्रुप एक्टिविटी है। कैप्टन लीड जरूर करता है, क्योंकि कैप्टन की सफलता भी एक एक प्लेयर के ऊपर निर्भर करती है। इसी तरह यह भी एक ग्रुप एक्टिविटी है। इसी तरह काम करता है। लेकिन उसकी सफलता वालंटियर्स के ऊपर निर्भर करती है। इस तरह हम कितना सीरियसली उस काम को लेकर चलते हैं और काम करते हैं, यह कामन फैक्टर इन दोनों के बीच में अब यह रहा है कि उन दोनों को हम कैसे जोड़तें है। उसका जवाब है–डायरेक्ट ऐसा कोई रिलेशन नहीं है कि हम एनएसएस को स्पोर्ट्स से जोड़ सकें, क्योंकि मिनिस्ट्री के अंदर भी जो मिनिस्ट्री ऑफ यूथ अफेयर्स है, उसके अंदर भी स्पोर्ट्स और एनएसएस कॉमन है। वहां वह स्पोर्ट्स को भी इनिशिएट करते हैं, जो एनएसएस को भी इनिशिएट करते हैं। आज का जो युवा है उसको हम दो के बारे में जानकारी देते हैं तो वो थोड़ा सा अपने को अच्छा कर पाता है। अपने जीवन में इन दोनों से जुड़ कर पता नहीं लगता है कि ग्रुप एक्टिविटीज कितनी इम्पोर्टेन्ट है और हमें कैसे कैसे आगे बढ़ना है।



एनएसएस के संस्थापक सदस्यों में शामिल रहे *कृष्ण कुमार गुप्ता* पिछले दिनों रामलाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के मेहमान थे। इस बीच उनसे हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के तृतीय वर्ष के विद्यार्थी *राहुल कुमार गुप्ता* ने देश का निर्माण, युवाओं की भूमिका, जागरुकता, समाजसेवा और सामाजिक संगठनों के महत्व जैसे मसलों पर बात की, जिसके उन्होंने बेबाकी से जवाब दिए। बातचीत के संपादित अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए पेश हैं...

एनएसएस ने देश भर में युवाओं को राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रेरित किया है। आज के युवाओं को आप स्वयं सेवा करने के लिए किस तरीके से प्रेरित करते हैं?

हर बच्चे को एनएसएस मैं समझाता हूं कि सबसे पहले आपको अपने आत्मज्ञान से अपने आपको पहले ठीक करना है। आपको समझना होगा कि जो मैं कर रहा हूं, जो मेरा लक्ष्य है, उसको मैं कैसे सफलतापूर्वक हासिल कर सकता हूं। अब जब हम बच्चों को यह समझाते हैं कि एनएसएस में किस तरीके से आप सेवा करेंगे? चाहे वह स्वच्छता अभियान हो, चाइल्ड एजूकेशन हो या और जो भी एक्टिविटीज हों, वह सारी एक्टिविटीज हमारे व्यक्तित्व का विकास करती हैं। जब हम इसको राष्ट्र निर्माण से जोड़ते हैं, जो हमारा व्यक्तिगत विकास हुआ, सोच में हमारे एक अच्छापन आया, हमने उसको शेयर किया। परिवार के साथ–साथ परिवार से समाज और समाज का इकट्ठा रूप जो है, देश की तरफ जाता है। देश के निर्माण की जब बात आती है तो यह कहां से शुरू होगा? जब आप एक वालंटियर है। आप दूसरों के बारे में सोचते हैं कि हम कुटुम्बकम का भाव रखते हैं, अपने परिवार को ही अपना कुटुम्ब बनाना है, तब यह आगे बढ़ने की सीढ़ियां होती हैं। हमने अपने परिवार को देखा, फिर हमने समाज को देखा, अपने शहर को देखा, फिर देश को देखा। इस तरह जो युवा चरित्र है या युवा एक्शन है, जो एक देश की ताकत होती है, ऊर्जा होती है। अगर हमारे देश की ऊर्जा पॉजिटिव होगी, अच्छी दिशा रहेगी तो हम देश के विकास में सहायक होंगे। अगर आज का हमारा युवा कहीं न कहीं भ्रमित होगा, वह अपने को ही नहीं सेटल कर पा रहा तो देश का विकास कैसे करेगा? मैं बच्चों को बोलता हूं कि एनएसएस आपको क्या देता है? एनएसएस आपका व्यक्तिगत विकास करता है। आप कम्युनिटी सर्विसेज के लिए कम्युनिटी में जाते हैं। आपको कम्युनिकेशन स्किल देता है। ग्रुप एक्टिविटी देता है। यह सारी चीजें और बहुत सारे फेक्टर्स हैं जो बच्चों के साथ शेयर करता हूं। उनको बताता हूं कि जब आपका विकास होगा तो अपने आप देश का विकास होगा।

आपको 2024 में महात्मा गांधी सोशल वर्क अवार्ड मिला। यह आपके जीवन में एक बड़ी उपलब्धि में से एक है तो गांधी जी के विचार आपके कार्य में किस तरह से सहायक हैं?

गांधी जी को जहां तक मैं समझता हूं, अध्यात्म के ऊपर गांधी जी ने बहुत कुछ लिखा है। उन्होंने उसमें बहुत सारे एक्स्पेरिमेन्ट किया है। पॉलिटिकल लीडर के रूप में तो गांधी जी को बहुत कामयाब नहीं समझता हूं। आध्यात्म के ऊपर मैं गांधी जी को बहुत मानता हूं। वह ही हमारे आधार हैं। गांधी जी ने युवाओं के ऊपर बहुत काम किया है। वही हमारी प्रेरणा हैं और उसी आधार पर मुझे अवार्ड मिला है।

आजकल हम देखते हैं कुछ युवा एनजीओ शुरू करते हैं, लेकिन कई बार होता है कि युवा जो एनजीओ शुरू करते हैं, वह शुरू करते ही बंद पड़ जाते हैं। वह काम नहीं कर पाते। सर, आपको क्या लगता है, अगर समाज सेवा की दृष्टि से हम कोई एनजीओ शुरू कर रहे हैं तो उसका स्टार्टिंग प्वाइंट क्या होना चाहिए?

देखिए, कोई भी एनजीओ जब शुरू करना होता है तो पैसा होना जरूरी है। पैसा एनजीओ की नींव है। वहीं से आपको पैसे की आवश्यकता पड़ती है। सोचिए, पैसा ही नहीं होगा तो एनजीओ को अड्जस्ट कैसे करेंगे, कैसे चलाएंगे? डेढ़ रुपए खर्च बहुत होता है। जब एनजीओ की शुरुआत हुई थी तो यह फंडिंग होती थी। कुछ गवर्नमेंट से फंडिंग होती थी। कुछ समाज से, कुछ सीएसआर से फंडिंग होती थी। फौरन फंडिंग भी लोग ले लेते थे। जिन लोगों ने इसका व्यावसायीकरण कर दिया। एनजीओ के पैसे का मिसयूज शुरू कर दिया, फंडिंग का मिसयूज करने लगे। वह अब एनजीओ को कॉर्पोरेट की तरह यूज करने लगे हैं। इसलिए बहुत सारे आफ्टर इफेक्ट आए। आफ्टर इफेक्ट में ऑडिटिंग शुरू हो गई। एनजीओ में उसके बाद कुछ ऐसे रूल बनें कि जो आज का युवा अगर कोई एनजीओ बनाना चाहता है तो उसे काम कम, अकाउन्ट की तरफ ज्यादा ध्यान देना पड़ेगा। उसका एक एक पैसा ऑडिट होगा। जो ऑडिट होगा, इसका मतलब उसके ऊपर एक और बोझ आ गया।

मेरा अंतिम सवाल है कि देश के युवाओं और आने वाली पीढ़ियों के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

आज का जो समय है, बहुत प्रतिस्पर्धा का समय है। यह माना जाता है कि जो इस कॉम्पिटिशन में अपने आप को तैयार रखता है, वही आगे सफलता की तरफ जा सकता है। अब युवा दो चीजों में फंस गया है। एक कंफर्ट जोन और दूसरा सोशल मीडिया। इससे उसका टाइम मैनेजमेंट डिस्टर्ब हो जाता है। वह अपने समय को साध नहीं पाता है। मैं बच्चों को यह कहना चाहता हूं कि अपने को इतनी चीजों में इन्वॉल्व अगर करना है तो टाइम मैनेजमेंट का ध्यान रखना होगा। आप टाइम को इस तरीके से मैनेज करिये कि आप सब एक्टिविटीज को बैलेंस कर सकें। जिस समय आपके पास पैसा भी आ गया। आप अपना स्वास्थ्य हायजीन भी ठीक कर लें। सोशल कनेक्शन भी आ गया। साथ ही इकोनॉमिक प्रोग्रेस भी आपका हो गया। अगर आप इन क्षेत्रों में आगे बढ़ेंगे, काम करेंगे तभी आप आगे बढ़ पाएंगे। देश और समाज के लिए भी कुछ कर पाएंगे।

डिजिटल सुरक्षा के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनें

निधि

नई दिल्ली। सेंटर ऑफ साइबर सिक्योरिटी एंड फॉरेंसिक सोसाइटी ने रामलाल आनंद महाविद्यालय में 14 अक्टूबर 2025 को साइबर सेफ्टी अवेयरनेस सेमिनार का आयोजन किया। इस आयोजन में विद्यार्थियों को साइबर अपराधों के बारे में अनेक जानकारियां और बचाव के तरीकों तथा सुरक्षित इंटरनेट उपयोग के महत्व के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने विद्यार्थियों को डिजिटल सुरक्षा के प्रति जिम्मेदार और एक अच्छा नागरिक बनने की प्रेरणा दी। इस सेमिनार के मुख्य वक्ता के रूप में रहे सहायक पुलिस आयुक्त स्पेशल सेल दिल्ली मनोज कुमार ने बताया कि आज के डिजिटल युग में इंटरनेट का सही और सुरक्षित उपयोग जरूरी है। उन्होंने साइबर अपराधों के प्रकारों, उनसे बचने के तरीकों और सुरक्षित पासवर्ड तथा डाटा प्रोटेक्शन के महत्व पर चर्चा की। संचालन अनुष्का अवस्थी और हर्षित ने किया। इस आयोजन में संयोजिका साक्षी शर्मा, सह–संयोजिका मनीषा वाधवा और दीक्षा सप्रा सहित कई विद्यार्थी और शिक्षक उपस्थित रहे। अंत में मौजूद रहे विद्यार्थियों को ई–सर्टिफिकेट प्रदान किए गए।

एनएसएस परेड के जरिए अभ्यास

माही

नई दिल्ली। राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई ने 13 अक्टूबर 2025 को रामलाल आनंद महाविद्यालय के ग्राउंड में परेड का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और टीम भावना को विकसित करना था।

एनएसएस यूनिट के प्रोग्राम अफसर डॉ. अनुराग शर्मा ने एनएसएस विद्यार्थियों को परेड के अभ्यास के साथ परेड में सहभागिता के बारे में बताया। परेड के दौरान विद्यार्थियों ने अनुशासन, तालमेल और टीम स्पिरिट का प्रदर्शन किया। इसमें एनएसएस के स्वयंसेवी सदस्यों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

बैक्टीरियोफेज से उम्मीद बनी

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। रोगाणुरोधी प्रतिरोध जागरुकता सप्ताह पर रामलाल आनंद महाविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग की समिति माइक्रोबायोलॉजिका ने एलुमनाइ इंटरेक्शन 18 नवंबर 2025 को आयोजित किया। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को संक्रामक रोगों और एंटीबायोटिक के सही उपयोग तथा उनसे बचाव के उपायों के बारे में जागरूक करना था। एलुमनाइ इंटरेक्शन में 2016–19 बैच के वैभव नैन और 2017–2020 बैच के ललित मोहन शामिल रहे।

ललित मोहन ने बैक्टीरियोफेज पर बताया कि रोगाणुरोधी प्रतिरोध एक बढ़ती चुनौती है। बैक्टीरियोफेज के



ललित मोहन, एलुमनाइ आरएलएसी

बारे में विद्यार्थियों को कहा कि वह किस तरह बैक्टीरिया को मारता है। उन्होंने बैक्टीरियोफेज थेरेपी के विभिन्न चरणों तथा उसके जीवनचक्र, लाइटिक चक्र, लाइसोजेनिक चक्र की बात की। उन्होंने यह भी बताया कि इस तकनीक के प्रयोग से विश्व भर में लाखों लोगों की जान बचाई जा चुकी है।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में पीएचडी रिसर्च स्कॉलर वैभव नैन ने बताया कि टीबी की खोज रॉबर्ट कोच ने 24 मार्च 1882 को की थी। यह बीमारी कम समय में फैल जाती है। इसका इलाज लंबे समय तक या जीवन भर भी चलता है। यह हमारी अर्थव्यवस्था के लिए भी अच्छा नहीं है। एंटीबायोटिक के बारे में जानकारी दी कि किस तरह से इससे लड़ना चाहिए। इस मौके पर समिति संयोजक डॉ. शालिनी स्वामी, शिक्षक प्रभारी डॉ. निधि. एस. चंद्रा, प्रो. प्रेरणा दीवान, प्रो. वंदना गुप्ता, डॉ. सुधा चौधरी, डॉ. एम सलोमी जॉन, डॉ. सुनीला हुड्डा, डॉ निधि वर्मा सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

रचनात्मकता के रंगों से गढ़े गए पोस्टर

आलोक यादव

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में 7 नवंबर 2025 को अस्मि समिति ने अंतर महाविद्यालय पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता आयोजित की। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का विषय पूर्वाग्रह से संतुलन की ओर था, जो समाज में व्याप्त रूढ़ियों और धारणाओं को चुनौती देने की दिशा में एक सार्थक पहल थी।

प्रतिभागियों ने कागज के पन्नों पर रंगों और रेखाओं के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हुए लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय, मानसिक स्वास्थ्य, शिक्षा और राजनी. तिक चेतना जैसे विभिन्न आयामों को रचनात्मक रूप से प्रस्तुत किया। कई पोस्टरों में यह संदेश उभरकर सामने आया कि पूर्वाग्रह न केवल व्यक्ति की सोच को सीमित करते हैं, बल्कि समाज की प्रगति में भी एक तरह से बाधा बनते हैं।

प्रतियोगिता के समापन के बाद प्रतिभागियों के बनाए गए पोस्टर लेकर महाविद्यालय परिसर में अवेयरनेस कैम्पेनिंग की गई, जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में उक्त विषय को लेकर सामाजिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षणिक आयामों की समझ विकसित करना था। इस दौरान समिति के जेंडर चौंपियन कृष्णा आनंद, युमना समीम, श्वेता सिंह, महक और समिति के अन्य सदस्य उपस्थित थे।



रामलाल आनंद महाविद्यालय की निर्वाण समिति ने योगोत्सव पर स्पीकर सत्र का आयोजन किया।

सजगता, शांति व मूल्यों को पहचानें

भारत

नई दिल्ली। योग का कार्य, ध्यान को एक जगह केंद्रित करना एवं विचारों को जोड़ना मिलाना है। किसी भी मनुष्य का मन ज्यादा समय के लिए एक ही जगह केंद्रित नहीं हो सकता। बस मन कुछ समय के लिए स्थिर हो जाता है। यह बात 19 नबंवर 2025 को रामलाल आनंद महाविद्यालय की निर्वाण योग और ध्यान समिति के योगोत्सव पर स्पीकर सत्र के दौरान प्रशिक्षक और वक्ता ब्रह्मा कुमारी लता ने कही।

उन्होंने अपने संबोधन में आज की भाग–दौड़ भरी जीवनशैली में मनुष्य बाहरी उपलब्धियों की ओर अधिक आकर्षित हो जाता है, जबकि वास्तविक शांति और संतुलन भीतर से प्राप्त होते हैं। योग केवल

- **निर्वाण योग और ध्यान समिति के योगोत्सव पर स्पीकर सत्र का आयोजन**
- **योग केवल शारीरिक अभ्यास नहीं, यह आत्मजागरूकता की एक प्रक्रिया है**

शारीरिक अभ्यास नहीं बल्कि यह आत्म–जागरूकता की एक प्रक्रिया है। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रतिदिन कुछ समय स्वयं के लिए निकालकर ध्यान करने की सलाह दी, जिससे मानसिक स्पष्टता और सकारात्मकता विकसित हो सके।

योगोत्सव में मुद्रा पारंपरिक योग, स्पंदन लयबद्ध योग, ध्यान धरा अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। संचालन शुभी ने किया। प्रतियोगिता के दौरान प्रतिभागियों की प्रस्तुतियों में अनुशासन, संतुलन और रचनात्मकता का सुंदर मिश्रण देखने को मिला, जिसने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

निर्णायक मडंल में इतिहास विभाग के शिक्षक डॉ. श्यामजीत यादव सहित अन्य शिक्षक मौजूद रहे। ब्रह्मा कुमारी लता ने सत्र के समापन के दौरान ध्यान को अपने भीतर लौटने की यात्रा बताते हुए प्रतिभागियों को आत्म सजगता, मानसिक शांति और आत्म मूल्य को पहचानने की प्रेरणा दी। इस दौरान निर्वाण समिति की संजोयिका डॉ. शिखा, सह संयोजिका डॉ. सुनीला हुड्डा, प्रो. सीमा गुप्ता और निर्वाण समिति की अध्यक्ष रघवी शर्मा सहित समिति के सदस्य एवं विद्यार्थी मौजूद रहे।

विचारों को साझा करने का मंच देती है संगोष्ठी

कृष्णा

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की समिति संगोष्ठी का 10 अक्टूबर 2025 को ओरिएंटेशन हुआ। इस कार्यक्रम का उद्देश्य नए विद्यार्थियों को समिति की कार्यप्रणाली, उद्देश्यों और गतिविधियों से परिचित कराना था। कार्यक्रम की शुरुआत स्वागत संबोधन से हुई, जिसमें विद्यार्थियों को बताया गया कि संगोष्ठी केवल एक अकादमिक मंच नहीं बल्कि व्यक्तित्व विकास और रचनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर भी है।

कार्यक्रम में संगोष्ठी के उपाध्यक्ष अंजुल पाण्डे ने कहा कि यह समिति पठन–पाठन के साथ–साथ विचारों को आदान–प्रदान करने का सशक्त मंच प्रदान करती है। यहां विद्यार्थियों को समसामयिक विषयों पर चर्चा करने, लेखन कौशल विकसित करने और मंच संचालन जैसी गतिविधियों में भाग लेने का अवसर भी मिलता है। इस समिति की संचालिका देवांशी ने बताया कि पब्लिक रिलेशन, मीडिया मार्केटिंग संगोष्ठी के मुख्य भाग हैं। आयुष जिंदल ने ऑनलाइन माध्यम, सोशल मीडिया पोस्ट, डिजाइन आदि के बारे में बताते हुए कहा कि इनके प्रयोग से समिति की सूचनाओं को एक दूसरे तक पहुंचाने में आसानी होती है।

समिति के संयोजक डॉ. राजेश गौतम ने कहा कि सामाजिक भागीदारी से ही हम सभी सीखते हैं, लेकिन आज सोशल मीडिया के अधिक प्रयोग से यह भागीदारी कम हो गई है। इसके साथ ही उन्होंने आगे कहा कि अपनी प्रतिभा को पहचानिए और अच्छे भविष्य की शुरुआत कीजिए। इस मौके पर हिंदी विभाग के शिक्षक डॉ. रोशनलाल मीणा, डॉ. कुलदीप सिंह समेत अनेक छात्र मौजूद रहे।



रामलाल आनंद महाविद्यालय की संगोष्ठी समिति का ओरिएंटेशन।

फोटोग्राफी और फिल्म प्रोडक्शन में दिखाया हुनर

उत्कर्ष कुमार

नई दिल्ली। चयनित विद्यार्थी महाविद्यालय के आगामी आयोजनों और गतिविधियों में अपनी भूमिका निभाएंगे। यह बात दृश्यम समिति के संयोजक डॉ. राजेंद्र ने रामलाल आनंद महाविद्यालय में 29 सितंबर 2025 को फोटोग्राफी समिति दृश्यम के ऑडिशन के दौरान कही। ऑडिशन में विभिन्न विभाग के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

समिति में रचनात्मक और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को शामिल करने के उद्देश्य से चयन प्रक्रिया आयोजित की गई, जिसमें फिल्म प्रोडक्शन, सोशल मीडिया और जनसंपर्क, इवेंट मैनेजमेंट और ग्राफिक डिजाइनिंग के लिए विद्यार्थियों का ऑडिशन लिया गया। इंटरव्यू पैनल में समिति के संयोजक डॉ. राजेंद्र और सहसंयोजक डॉ. अरुण कुमार मौजूद रहे।

फोटोग्राफी टीम में ऑडिशन देने वाले विद्यार्थियों को एक निश्चित विषय दिया गया, जिस पर फोटो खींचकर विद्यार्थी को अपनी रचनात्मक दृष्टि और तकनीकी कौशल का प्रदर्शन करना था। उन्होंने अपनी समझ से यह काम किया। फिल्म प्रोडक्शन के लिए कहानी कहने, निर्देशन और तकनीकी क्षमता को जांचने के लिए विद्यार्थियों से महाविद्यालय के फ्रंट लॉन में एक शॉर्ट फिल्म बनवाई। सोशल मीडिया और जनसंपर्क, इवेंट मैनेजमेंट और ग्राफिक डिजाइनिंग टीम के लिए चयन मुख्य रूप से इंटरव्यू लिया गया।

लैंगिक असमानता पर डाला गया प्रकाश

माही

नई दिल्ली। जेंडर सेंसिटाइजेशन कमेटी अस्मि की ओर से 6 नवम्बर 2025 को समाज में मौजूद लैंगिक असमानता, घरेलू हिंसा और महिलाओं के प्रति संवेदनशील मुद्दे पर चोट करती फिल्म 'थप्पड़' की स्क्रीनिंग रखी। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में महिलाओं के प्रति सम्मान, समानता और स्त्री सशक्तिकरण का भाव पैदा करना था। अनुभव सिन्हा के निर्देशन और तापसी पन्नू के लीड रोल वाली इस सामाजिक फिल्म में भारतीय समाज की कमियों को दर्शाया गया, जिसमें महिलाओं को किस प्रकार की कठिनाइयों और हिंसा का सामना करना पड़ता दिखाया है। फिल्म 'थप्पड़' ने संदेश दिया कि किसी भी रिश्ते में आत्म सम्मान सबसे महत्वपूर्ण होता है। किसी भी प्रकार की हिंसा या अपमान को सामान्य नहीं माना जाना चाहिए। स्क्रीनिंग के दौरान विद्यार्थियों ने फिल्म के विभिन्न दृश्यों पर प्रतिक्रिया दी। कई विद्यार्थियों ने कहा कि अक्सर समाज में महिलाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे समझौता करें और चुप रहें, जबकि आत्मसम्मान के साथ जीवन जीना हर व्यक्ति का अधिकार है। फिल्म के उपरांत आयोजित चर्चा सत्र में विद्यार्थियों ने खुलकर अपने विचार रखे। उन्होंने घरेलू हिंसा को केवल शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक हिंसा के रूप में भी समझने की आवश्यकता पर बल दिया। चर्चा में यह भी सामने आया कि शिक्षा संस्थानों की भूमिका केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि सामाजिक चेतना और संवेदनशील नागरिक बनाने में भी महत्वपूर्ण होनी चाहिए। इस दौरान सभी जेंडर चैंपियन रिया, श्वेता सिंह, कृष्णा आनंद, महक, अथर्व गंभीर ,यमुना शमीम सहिते सहित विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।



डॉ. उर्वशी कुहाड़ ने की फिल्म पर चर्चा।

'केसरी चैप्टर 2' से जाना जलियांवाला बाग का सच

नई दिल्ली। महाविद्यालय में 8 सितंबर 2025 को राजनीति विज्ञान की समिति स्टेटक्राफ्ट ने ऐतिहासिक घटना पर आधारित फिल्म का प्रदर्शन किया। विद्यार्थियों को जलियांवाला बाग हत्याकांड पर आधारित फिल्म केसरी चैप्टर 2 दिखाई गई। इससे विद्यार्थियों को ब्रिटिश अधिकारी जनरल डायर की सच्चाई को जानने का मौका मिला। साथ ही शंकरन नायर के योगदान को भी समझा।

फिल्म से जुड़ी विभिन्न घटनाओं पर चर्चा की गई। विद्यार्थियों ने इतिहास से जुड़ी घटनाएं–उपनिवेश, व्यापार, शोषण व आयात–निर्यात के मुद्दे पर चर्चा की। विद्यार्थियों के प्रश्नों का उत्तर डॉ. उर्वशी कुहाड़ ने दिया। उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

टी–20 क्रिकेट : रामलाल आनंद महाविद्यालय ने पीजीडीएवी और शहीद भगत सिंह प्रातः को हराया

डॉ. अंकित के उम्दा प्रदर्शन से RLAC के नाम दोनों मैच

- आरएलएसी की टीम ने 19 रनों से दी शिकस्त
- आरएलएसी के डॉ. अंकित कुमार बने मैन ऑफ द मैच

दीपक कुमार

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय और पीजीडीएवी महाविद्यालय के बीच 19 नम्बर 2025 को एक दिवसीय टी–20 क्रिकेट मैच खेला गया। पीजीडीएवी के मैदान में हुए इस मैच में आरएलएसी की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पीजीडीएवी महाविद्यालय को 19 रन से पराजित किया। आरएलएसी की टीम ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी करने का फैसला किया। कप्तान डॉ. रोशनलाल मीणा और डॉ. पवन शर्मा की ओपनर जोड़ी ने 4.5 ओवर में 43 रनों की साझेदारी की।

डॉ. रोशन लाल मीणा ने 2 छक्के और 7 चौके के साथ 32 गेंद में 49 रन की पारी खेली। 13 गेंदों पर 15 रन की पारी खेल डॉ. पवन शर्मा लौट आए। उनके बाद बल्लेबाजी करने उतरे डॉ. अंकित कुमार ने सधी हुई बल्लेबाजी करते हुए 32 गेंदों पर 46 रन की शानदार पारी खेली। उन्होंने 3 छक्के और 4 चौके लगाए। बाद में वह अक्षय चामोली का शिकार हुए। ओपनर्स के 8 विकेट के नुकसान पर आरएलएसी ने विरोधी टीम को 170 रनों का लक्ष्य दिया। डॉ. अरुण गौतम ने आरएलएसी को पहली सफलता डॉ. भानु के रूप में दिलाई। इसके बाद डॉ. संदीप भी डॉ. अरुण गौतम का शिकार बने ओपनर डॉ. मुकेश 51 गेंद में 55 रनों की अर्धशतकीय पारी खेली। उन्होंने डॉ. योगेश के साथ मिलकर तीसरे विकेट के लिए 38 गेंदों में 59 रनों की साझेदारी की। डॉ. योगेश 6 चौके की मदद से 23 गेंद में 29 रन बनाए। उनका विकेट डॉ. अंकित ने लिया। मध्यक्रम के बल्लेबाज डॉ. पवन सिंह और डॉ. अक्षय ने क्रमशः 18 और 10 रन बनाए। पीजीडीएवी की टीम के विकेट लगातार गिरते रहे। उनकी टीम 19.4 ओवर में 150 रन पर सिमट गई। आरएलएसी के डॉ. अरुण गौतम, डॉ. बृजेंद्र और डॉ. गंधर्व ने 2–2–1 विकेट लिया। उम्दा प्रदर्शन करने वाले डॉ. अंकित मैन ऑफ द मैच बने। डॉ. अंकित ने 32 गेंद में 46 रन बनाए और 2.4 ओवर में 20 रन देकर 3 विकेट झटके।



पीजीडीएवी महाविद्यालय को हराने के बाद रामलाल आनंद महाविद्यालय की टीम ने खुशी का इजहार किया।

दीपक कुमार

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय और शहीद भगत सिंह महाविद्यालय प्रातः के बीच 25 दिसंबर 2025 को हुए टी–20 मुकाबले में रामलाल आनंद महाविद्यालय की टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। आरएलएसी में हुए मैच में 20 ओवर में 6 विकेट खोकर टीम ने 175 रनों का सम्मानजनक स्कोर खड़ा किया। लक्ष्य का पीछा करते हुए शहीद भगत सिंह महाविद्यालय की टीम 8 विकेट खोकर 160 रन ही बना सकी। इस तरह रामलाल आनंद महाविद्यालय की टीम ने 15 रनों से जीत दर्ज की।

आरएलएसी की शुरुआत अच्छी नहीं रही। टीम का पहला विकेट पहले ओवर की अंतिम गेंद पर 11 रनों पर गिरा। डॉ. रवि यादव ने रोशन लाल मीणा का विकेट लिया। दूसरा विकेट डॉ. पवन शर्मा के रूप में गिरा। वह एक रन ही बना सके। तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करने आए डॉ. अंकित कुमार ने पारी को संभालते हुए शानदार अर्धशतकीय पारी खेली। 12 चौके और 2 छक्के की मदद से 58 गेंद खेलकर 79 रन बनाए। इसके बाद डॉ. अरुण ने 44 गेंद में नाबाद 57 रनों की अर्धशतकीय पारी खेली। डॉ. अरुण गौतम ने 8 रन बनाए। डॉ. गंधर्व कौशिय ने एक रन का योगदान दिया। दोनों बल्लेबाज डॉ. राजीव का शिकार बने।

जवाब में शहीद भगत सिंह महाविद्यालय प्रातः की ओर से सलामी बल्लेबाज डॉ. प्रशांत 4 चौके और 1 छक्के की मदद से 25 गेंद पर 37 रन की पारी खेलते हुए टीम को एक सधी शुरुआत दिलाई। उनका साथ डॉ. गौरव ने दिया। उन्होंने 4 चौके की मदद से 16 रन बनाए। टीम के कप्तान डॉ. दीपक ने 16 रनों का योगदान दिया। शहीद भगत सिंह महाविद्यालय प्रातः की ओर से कोई भी बल्लेबाज टिककर नहीं खेल पाया और पूरी टीम 20 ओवर में 8 विकेट पर 160 रन ही बना सकी।

गेंदबाजी में शहीद भगत सिंह महाविद्यालय की ओर से डॉ. रवि यादव ने 3 विकेट और डॉ. राजीव ने 2 विकेट लिए। वहीं आरएलएसी की ओर से डॉ. बृजेंद्र, डॉ. गंधर्व और डॉ. सुरेंद्र कुमार ने 2–2 विकेट लिए। शानदार प्रदर्शन के लिए डॉ. अंकित कुमार को मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया।

फील्ड नहीं, सेक्टर पर ध्यान देना आवश्यक

खुशी प्रजापति

नई दिल्ली। फील्ड को नहीं, एक सेक्टर को प्राथमिकता देनी चाहिए। सर्टिफिकेशन कोर्स पर ध्यान देना जरूरी है। काम में अनुभव ही हमें आगे बढ़ाता है। यह बात सुश्री वंदिता चंगरानी ने रामलाल आनंद महाविद्यालय में 1 अक्टूबर 2025 के सांख्यिकी विभाग के एलुमनाइ टॉक में कही। वंदिता ने 2024 में महाविद्यालय के सांख्यिकी विभाग से बीएससी की पढ़ाई की। तत्पश्चात यूनिवर्सिटी मैनहेम जर्मनी से डाटा साइंस में एमएससी पूरी की।

विद्यार्थियों ने उनसे कॅरिअर विकास और यूरोपीय नौकरी बाजार पर केंद्रित प्रश्न पूछे। जैसे आने वाले वर्षों में डाटा साइंस के क्षेत्र में एआई की क्या भूमिका होगी, यूरोपियन जॉब मार्केट क्या है, इंटर्नशिप के क्या फायदे हैं, बिजनेस में कम्युनिकेशन स्किल का होना कितना जरूरी है, बिजनेस एनालिटिक्स क्या है, लिंक्डन पर अपने प्रोजेक्ट्स को डालने और प्रोफाइल को बिल्ड एंड अपडेट रखने से ये कैसे हमारे काम को लोगों तक पहुंचा सकता है, यह कैसे हमें मार्केटिंग में मदद करता है, जैसे प्रश्नों के जवाब विद्यार्थियों ने जाने। इस मौके पर संयोजक डॉ. रा. जेंद्र, प्रभारी डॉ. कुलदीप सिंह, प्रो. सीमा गुप्ता, डॉ. नीना मित्तल सहित कई विद्यार्थी उपस्थित रहे।



एलुमनाइ टॉक में वंदिता चंगरानी ने कॅरिअर विकास पर बात रखी।

कमजोरियों को सुधार कर अवसरों को समझें

अनुषा यादव

नई दिल्ली। कमजोरियों को एक तरह से नकारात्मक या बाधा की तरह न देखें। उन्हें ऐसे क्षेत्र की तरह समझें, जिनमें सुधार और प्रगति की संभावना हो। यह बात डॉ. मनोज गाडगे ने रामलाल आनंद महाविद्यालय में 30 सितंबर 2025 को प्लेसमेंट सेल पाथवे के सेमिनार में कही।

डॉ. मनोज गाडगे ने विद्यार्थियों को कैम्पस से कॉरपोरेट दुनिया तक की यात्रा के बारे में बताते हुए कहा कि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और सतत अधिगम होना चाहिए। उन्होंने समूह चर्चा और व्यक्तिगत साक्षात्कार में सफल होने के तरीके विद्यार्थियों को समझाए। विद्यार्थियों को तकनीकी और प्रबंधकीय कॅरिअर के बीच निर्णय लेने और नेटफ्लिक्स के एचआर मॉडल को पढ़ने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि जितना अधिक पढ़ेंगे उतना ही अधिक आप सभी को जानकारी होगी, जिससे आपको कॅरिअर में लाभ मिलेगा। इस दौरान पाथवे के संयोजक डॉ. पवन कुमार, सह संयो. जिका सुश्री सृजना सिंह, डॉ सिद्धार्थ सहित अनेक विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कैम्पस कनेक्ट के 28वें अंक के विमोचन पर प्राचार्य ने कहा–

सभी जगह अंक की पीडीएफ भेजी जाए



महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के संयोजक प्रो. राकेश कुमार, अंक की संपादक भारती और उपसंपादक शिवानी ने ईन्यूज लेटर 'कैम्पस कनेक्ट' का विमोचन किया।

आशीष राणा

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के मासिक ईन्यूज लेटर 'कैम्पस कनेक्ट' के 28वें अंक का विमोचन 27 फरवरी 2026 को किया गया। विमोचन में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के संयोजक प्रो. राकेश कुमार, अंक की संपादक भारती और उपसंपादक शिवानी मौजूद रहीं। दोनों विद्यार्थी हिंदी पत्रकारिता के द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी हैं।

प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने हिंदी पत्रकारिता के विद्यार्थियों को बधाई देते हुए 'कैम्पस कनेक्ट' के भविष्य के अंकों पर बातचीत की। प्राचार्य ने 'कैम्पस कनेक्ट' के अंकों को पीडीएफ के रूप में भेजने पर जोर दिया। इसका लाभ यह होगा कि महाविद्यालय में हो रही गतिविधियों की जानकारी इस ईन्यूज लेटर के जरिए दूसरे लोगों तक पहुंचेंगी। इसी के मद्देनजर उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया ग्रुप्स में 'कैम्पस कनेक्ट' को साझा किया जा सके। फरवरी अंक का प्रथम पृष्ठ गणतंत्र दिवस समारोह पर केंद्रित रहा। संपादक भारती ने अपनी संपादकीय टिप्पणी में मधुबनी चित्रकला और बिहार की अनोखी संस्कृति पर बात की है। संपादकीय पृष्ठ पर हिंदी पत्रकारिता की छात्रा दिव्या की ओर से लिया गया कृषि अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशांक पटेल का साक्षात्कार शामिल किया गया। प्राचार्य ने संपादक और उपसंपादक को बधाई दी है।

सम्भव में सोशल मीडिया व एआई पर विशेष सामग्री

आलोक यादव

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से प्रकाशित अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'सम्भव' के जुलाई–दिसम्बर 2025 अंक का विमोचन 12 मार्च 2026 को किया गया। इस अवसर पर अंक की छात्र संपादक आस्था त्रिपाठी, उपसंपादक श्वेता सिंह और अंशिका वर्मा ने महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार के साथ विमोचन की औपचारिकता पूरी कराई। विमोचन के दौरान प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने विद्यार्थियों के संपादकीय प्रयासों की सराहना की और हिंदी पत्रकारिता के विद्यार्थियों को बधाई देते हुए 'सम्भव' की सामग्री पर बात की। विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने बताया कि अंक में सोशल मीडिया के विविध आयामों सकारात्मक प्रभाव, चुनौतियां, और डिजिटल तकनीक, आर्टीफीशियल इंटेलीजेंस (एआई) और बदलते मीडिया परिदृश्य से जुड़ी विशेष सामग्री भी सम्मिलित की गई है, जिससे विद्यार्थियों को समकालीन मीडिया प्रवृत्तियों की समझ विकसित हो सके। डिजिटल तकनीक और एआई पर विशेष सामग्री दी गई है। इसी बातचीत में प्राचार्य ने पत्रिका का रजिस्ट्रेशन कराने के साथ आईएसएसएन नंबर लेने का प्रयास करने का सुझाव दिया ताकि इसे राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिल सके।



'सम्भव' पत्रिका का विमोचन प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता और संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने किया।

संरक्षक मंडल
प्राचार्य
प्रो. राकेश कुमार गुप्ता
विभागाध्यक्ष
प्रो. राकेश कुमार
परामर्शदाता
डॉ. अटल तिवारी
संपादक
शिवानी
उप-संपादक
शिवम कुमार